हिन्दुस्तान | www.livehindustan.com
अपने युवा

कवि होना दुर्लभ, कविता का करुणा से गहरा संबंध : प्रो. पंडा

- साहित्य अकादमी और एलबीएसएम का दो दिवसीय कविता उत्सव शुरू
- एक मंच पर 18 भाषाओं के कवियों ने किया कविता पाठ

जमशेदपुर, संवाददाता। कोल्हान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गंगाधर पंडा ने कहा कि संसार में मनुष्य के रूप में जन्म लेना दुर्लभ है और मनुष्य का कवि होना और भी दुर्लभ है। शास्त्रों में कहा गया है कि जो साहित्य, कला और संगीत को प्यार नहीं करता, वह सींग और पूंछविहीन पशु के समान होता है। कविता का करुणा से गहरा संबंध है। आदि कवि वाल्मीकि क्रौंच-वध से आहत होकर रोये और उनके मुंह से कविता पंक्ति निकल गई। कविता की शुरुआत करुण रस से हुई। वे शनिवार को एलबीएसएम कॉलेज के सभागार में साहित्य अकादमी और एलबीएसएम कॉलेज द्वारा आयोजित पूर्वी क्षेत्रीय कविता उत्सव के उद्घाटन के बाद आयोजित समारोह को संबोधित कर रहे थे।

एलबीएसएम कॉलेज के सभागार में पूर्वी क्षेत्रीय कविता उत्सव का उद्घाटन करते कोल्हान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गंगाधर पंडा। साथ में हैं प्राचार्य डॉ. एके झा व अन्य।

प्रो.पंडा ने कहा कि वाल्मीकि के रामायण से ही प्रेरित होकर तुलसीदास ने रामचरित मानस लिखा और दक्षिण भारत में कई रामायण लिखे गये। कुलपति ने भगवान जगन्नाथ पर संस्कृत की एक अष्टपदी भी सुनाई। विशिष्ट अतिथि कोल्हान विवि के कुलसचिव प्रो. जयंत शेखर ने भक्ति कविता की क्षमताओं की चर्चा करते हुए कहा कि आजादी के 75 साल बाद झारखंड में साहित्य अकादमी का आयोजन अपने आप में महत्वपूर्ण है। इसके पूर्व साहित्य अकादमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य में कहा कि किसी भी रचनाकार का सबसे बड़ा सम्मान यही है कि उसकी अभिव्यक्ति को सुना जाए। आरंभिक वक्तव्य में साहित्य अकादमी पूर्वी क्षेत्रीय मंडल के संयोजक और कॉलेज के प्राचार्य प्रो. अशोक अविचल ने कहा कि कविता नाद ब्रह्म की उपासना है और जो उसकी उपासना करता है वह मानवता के प्रति समर्पित होता है। आयोजन में पढ़ी गयी कविताएं हमारी राष्ट्रीय दशा और दिशा को अनुभव कराएंगी। झारखंड में पहली बार एक साथ 18 भाषाओं के कवि ने अपनी रचना सुनाई। इस दौरान प्रख्यात कथाकार जयनंदन को भी सम्मानित किया गया। जयनंदन को इफको-श्रीलाल शुक्ल सम्मान देने की घोषणा हुई है। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. विनय कुमार गुप्ता और डॉ. सविता पुईसेन तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मौसुमी पॉल ने किया। दूसरे सत्र में संताली के साहित्यकार मदन मोहन सोरेन की अध्यक्षता में असमिया के उत्तम कुमार बरदले, बांग्ला के कमल चक्रवर्ती, बोड़ो की रश्मि चौधरी, अंग्रेजी की बसुधारा राय, मैथिली के शिव टिल्लू, मणिपुरी के एमए हाशिम, नेपाली के राजा पुनियानी, ओड़िया के सौभाग्यवंत राणा, हो के डोबरो चूड़ीउली ने कविताओं का पाठ किया। मौके पर कुसुम ठाकुर, विमल झा, एचपी शुक्ला समेत कई मौजूद थे।